रात्रिक्लास 27-3-68 ओमशान्ति। "शिव बाबा याद है?"

यह है सम्बन्ध। रूहानी बाप और जीवात्माओं का सम्बन्ध। जीवात्माओं को तो अपना शरीर है, बाप को नहीं है। बेहद का बाप और जीवात्मायें। शिव बाबा को जीवात्मा नहीं कहेंगे। कहते हैं यह मेरा शरीर नहीं है। यह उनका जीव तो नहीं है ना। बाप कहते हैं जिस आत्मा ने 84 जन्म लिया है उन आत्माओं से बात करता हूं। जो अपने को पतित समझते हैं। मनुष्य तो हर बात में बेसमझ हैं। बाप सिध कर बतलाते हैं तुम बिलकुल ही तमोप्रधान बन गये हो। किसको पतित कहो तो बिगर पड़े। पतितपने का अर्थ नहीं समझते। बाप कहते हैं कितने तुम कांटे हो। बन्दर हो। तुम ने समझा है तो अर्थ समझते हो। नये कोई आते हैं तो फट से यह नहीं कहना है। पहले तो बिठाना चाहिए। कहते हैं ज्ञान की बातें सुनने लिए आये हैं। ज्ञान क्या है वह तो जानते ही नहीं। भक्त ज्ञान को चाहते हैं क्योंकि ज्ञान से ही सद्गति होता है। परन्तु यह जानते नहीं हैं। शास्त्रों को ही ज्ञान समझते हैं। उनको यह पता नहीं है यहां ईश्वर ज्ञान सुनाते हैं। ज्ञान सागर है ही वह। यह बिलकुल नई बातें हैं। भगवान बाबा है वह आया हुआ है वर्सा देने। इतना बुधि में बैठे तबकुछ समझे। चित्र तो लक्ष्मी-नारायण का हरेक मंदिर में हैं। परन्तु समझाने वाला कोई है नहीं। तुम समझाते हो शिवबाबा सभी का बाप है। और निराकार है। भगवान ब्रहमा विष्णु शंकर द्वारा स्थापना, विनाश पालना कराते हैं। लिखा हुआ भी है ब्रहमा द्वारा स्थापना। है ही त्रिमूर्ति। ब्रहमा है ही स्थापना करने लिए। और दूसरे जगह कहां जावेंगे। भगवान को स्थापना भी यहां ही करनी है। सृष्टि का चक्र फिरता ही रहता है। सेन्सीबुल मनुष्य समझ जावेंगे। 5000वर्ष बाद सभी को आना पड़ता है। जो भी चीज़ है, कलपन आद जो भी है फिर 5000वर्ष बाद यह चीज़ें होंगी। कहते हैं चीज़ टूट गई वह फिर कैसे होंगी। बहुतप्रश्न करते हैं।

मूल बात है लौकिक बाप, पारलौकिक बाप। लौकिक होते भी पारलौकिक को याद करते हैं। क्योंकि रावण राज्य में सभी दुःखी हैं। दुःख में ही पुकारते हैं। वहां दुःख तो होता ही नहीं। जब यहां कोई आते हैं तो आधा पौना घन्टा समझाते हो। म्युज़ियम वा प्रदर्शनी में तो ऐसे नहीं होता है। पहली बात है अलफ। यह पुरूषोत्तम संगम युग पर यह (ल०ना०) बनना है। समझाना तो बहुत पड़ता है। जब तक अलफ न समझा है बुधि में बैठेगा नहीं। जो फर्क समझाते हैं उनको बाप का परिचय है। हम बाप के बच्चे थे तो जरूर स्वर्ग के मालिक बनें होंगे। अगर नहीं समझते हो तो समझा जावेगा तुम स्वर्ग में नहीं थे। स्वर्ग के भाति नहीं था। भाति बनने से जरूर यहां आना पड़ेगा। सतयुग, त्रेता से तो द्वापर कलियुग के वासा बहुत हैं। 3-4बच्चे पैदा करते हैं। तो बहुत वृधि हो जाती है ना।

अच्छा बाप को याद करो। बाप कहते हैं मुझे अपने बाप को याद करो। तुम्हारी बुधि शिव बाबा तरफ चली जावेगी। परमधाम ही याद पड़ेगा। बच्चे समझते हैं शिव बाबा ही पढ़ाते हैं। तो तुम चार्ट में लिख सकते हो इतना समय हम बाबा से सम्मुख पढ़ते रहे। यहां तुम सम्मुख बैठे हो। बाप पढ़ा रहे हैं। बुधि बाहर कहां चली गई तो गोया योग ही न रहा। अच्छा बच्चों को गुडनाईट।

रात्रिक्लास 31-3-68 ओमशान्ति।

बाप दादा ने एक प्रश्न कमरे में महारथियों से पूछा कि तुम शरीर छोड़ने लिए तैयार हो? (सभी ने कहा इस समय की कमाई पूरी कर शरीर छोड़ें तो अच्छा है।) बाप दादा कहे ठीक है। फिर यह प्रश्न क्लास में चल रहा था तो बाप दादा आकर पधारे:- पुरूषार्थ कर रहे हैं जो एमआबजेक्ट है वह पूरी कर शरीर छोड़ें तो अच्छा है। बच्चे जानते हैं वर्सा पाना है। हम्यूर वर्सा पा रहे हैं। यह है गाड फादरली बर्थ राईट। बापसे तो यह वर्सा ही मिलेगा। ऐसी2 बातें कोई साधु सन्त आद नहीं कर सकते। तुम्हारी बुधि में है हम स्कूल में पढ़ रहे हैं। हम विश्व का मालिकबनने वाले हैं। विश्व का मालिक बाप बिगर कोई बना न सके। खुद बाप ही ऐसी सोगात देते हैं। सौगात भी नहीं कहेंगे। राजयोग की पढ़ाई पढ़ने ही आते हैं। तुम समझा सकते हो संगम पर

संगमयुग पर राजयोग की पढ़ाई का यह फल है। यह हैं उत्तम ते उत्तम पुरुषसभी से। ऐसे उत्तम ते उत्तम पद बाप ही प्राप्त कराते हैं। जो ऊंच ते ऊंच भगवत है उन से ही यह स्वर्ग की बादशाही मिलती है। यह तो बच्चों को निश्चय है। सिर्फ सुमिरण न कारण खुशी का पारा नहीं चढ़ता है। बाप आते ही हैं यह वर्सा देने। देवी देवताओं का राज्य स्थापन करने आते हैं। यह स्मृति में आने से बच्चों को खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। तब तो कहते हैं सम्पूर्ण बन कर जावें। तो खातरी भी हो जाये। बच्चे जानते हैं बाबा हमको पढ़ा रहे है। भाषण में भीयह समझाओ गीता पाठशाला में हम राजयोग की शिक्षा पा रहे हैं भगवान से। कृष्ण से नहीं। भगवान से। भगवान ही ज्ञान का सागर है। आकर पढ़ाते हैं। ज्ञान का सागर निराकार है। साकार ज्ञान ज्ञान का सागर हो न सके। बाप की ही स्थाई महिमा है। परमपितापरमात्मा ज्ञान कासागर है। वह निराकार है। ज्ञान का सागर ही हमको राजयोग सिखलाते हैं। पढ़ाई से ही विश्व की राजाई देते हैं। यह है ही राजयोग की पढ़ाई। मुख्य बात है याद की। जब समय नज़दीक आवेगा तो कल्प पहले मिशलनम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार कर्मातीत अवस्था को पावेंगे जरूर। जो पुरुषार्थ करते हैं वही पावेंगे। जोपुरुषार्थ ही नहीं करते वह पा न सके। जीवात्मा को सन्यास करना पड़ता है घर जाने लिए। सन्यास कराने वाला है बाप। बेहद का बाप बेहद का सन्यास कराते हैं। अभी है संगम। थोड़ा भी किसकोसमझाया जाये हम बेहद का सन्यास करते हैं, पुरानी दुनिया भूल नई दुनिया को याद करते हैं। इतनी सहज बात भी बुद्धि में क्यों नहीं बैठती। इतने पत्थर बुद्धि हैं। जब समझाया जाता है तो क्यों नहीं समझते हैं। और तो कोई ऐसे समझाते ही नहीं। तुम समझाते हो राजाई कैसे मिल सकती है। तुम ही कहते हो इस समय इस राजयोग की पढ़ाई से यहराजाई मिलती है। स्थापना होती है बाकी सभी विनाशहो जावेंगे। गीता में भी यह बातें हैं। यह है ड्रामा। ड्रामा के प्लैन अनुसार तुम अपनी राजधानी जरूर स्थापन करेंगे। बाकी मेहनत समझाने की है। मुख से समझाना होता है। तुम्हारे मुख से अमृत टपकता है। अमृत पीने वाले ही अमर बनते हैं। अमृत पीने से देवता भी बनते हैं। यह भी गायन है। बच्चे जानते हैं स्थापना होनी ही है। मेहनत से जितना वर्सा लिया था वही लेते रहते हैं। तुम देखते रहते हो। विघ्न भी पड़नी है। वह भी देखते हो। किस कारण कैसे2 विघ्नपड़ते हैं। बाप ने कहा है माया के विघ्न बहुत पड़ेंगे। न चाहते भी फालतू खयालात बुद्धि में आती है। मनुष्यों को कशिश भी बहुत होती है। देखते हुये कोई भी इच्छा न हो समझ जावे हम भाई-भाई हैं। हम भाईयों को जाना है बाप के डैस्कान अनुसार। पवित्र बनना तो अच्छा ही है। यह भी प्रैक्टीस करनी है। देह सहित दुनिया के का जो कुछ देखने में आता है, बाप कहते हैं देखते हुये कुछ भी न देखो। बाप को और घर को और वर्से को याद करो। मेहनत तो करनी पड़े। भगवान पढ़ाते हैं। भगवान भगवान बनाते हैं। मूल बात हैयाद की। इसलिए प्राचीन योग का बहुत मान है।

बच्चों को खातरी होनी, विघ्नों आद की कोई प्रवाह नहीं। तुम सर्विस करते रहो। राजाई जरूर स्थापन होनी ही है। तो अन्दर में उत्साह रहता है ना। बाकी टाईम वेस्ट भी न करना चाहिए। सर्विस का ही ध्यान रहना चाहिए। सर्विस अच्छी चल रही है। ठंढाई देखी जाती है तो सावधान किया जाता है। पतरा सभीको देते रहो। पवित्ररहने की भी युक्ति बतलानी पड़ती है। यह गीता के अचरबहुत अच्छे हैं। बाप कहते है काम महाशत्रु है। इन पर जीत पाने से तुम जगत जीत बन जावेंगे। अन्दर में ज्ञान टपकता है। आवाज़ नहीं निकलता। समझा जाता है हम याद से संतोप्रधान बन जावेंगे। फिर जाकर राजाई करेंगे। पढ़ाने वाला है बाप। उनकी बुद्धि में कब नहीं आवेगाकोईसे पैसा मांगे। न बच्चों को कहेंगे कि मांगो। दाता है ना। कहां भी मांगना अच्छा नहीं। सहज मिले तो दूध बराबरबेच... बेच लिया सो खत बराबर। बच्चों को डैस्कान हेट्रायल कर देखो। कोई से कुछ न मांगो। बाप तो बैठा है ना। बीती सो बीती देखो। और बातों को छोड़ो। अभी डैस्कान मिलती है कब भी कोई से नहीं मांगो। शुरूआत में तुम बच्चों के लिए यही खयालात रहता था कुछ मांगे नहीं। आपे ही दिया जाये। वा पूछ सकते हैं। अच्छा बच्चों को गुड नाईट। रूहानी बच्चों को नमस्ते।